बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 20

धर्मशाला, सोमवार, 13 जुलाई 2015

नशे की लत के इलाज के लिए अहम है आर्ट थैरेपी

पुनर्वास केंद्रों में आर्ट थैरेपी के माध्यम से इलाज हो चुका है आम

पुनर्वास केंद्रों में बीमार व्यक्ति के इलाज के लिए आर्ट थैरेपी एक आम जरिया बनता जा रहा है। इसका उपयोग भावनाओं को व्यक्त करने के लिए, व्यक्तिगत परीक्षणों व कलेशों के संबंध में संवाद करने के लिए किया जाता है। साथ ही किसी की व्यक्तिगत सच्चाई को बाहर लाने के लिए भी इसका इस्तेमाल होता है।

जैसे ही आर्ट थैरेपी की अवधारणा का विकास हुआ है। देश भर में इलाज की सुविधाओं में इसकी प्रमाणिक प्रभावशिलता भी समय-समय पर उभर कर सामने आई है।

चिकित्सीय दृष्टिकोण में बदलाव व विकास के साथ ही डाक्टरों व विज्ञानिकों ने मानव मनोविज्ञान के बारे में और अधिक जानकारी हासिल की है। लत को पूरी तरह बेनकाब करके और रिकवरी के दर्द के माध्यम से नशे के इलाज में इलाज व पुनर्वास की नई विधियां अपनाई गई हैं। अब आर्ट थैरेपी ऐसा माध्यम बन चुका है, जिसके जरिये सफल पुनर्वास केंद्र अपने मरीजों तक पहुंचने में कामयाब हो रहे हैं।

आर्ट थैरेपी का प्रयोग क्यों किया जा रहा है?

नशे की लत से बाहर आने की प्रक्रिया एक बहुत कठिन लड़ाई है। जो लोग नशे की लत से जुझ रहे होते हैं, उनकी सहायता व चिकित्सा के लिए कई प्रकार की चिकित्सीय तकनीकें, रणनीतियां और पुनर्वास कार्यक्रमों का उपयोग किया जाता है। हालांकि अलग-अलग प्रकार के दृष्टिकोण विभिन्न व्यक्तियों पर अलग-अलग तरह से कार्य करते हैं, वहीं चिकित्सा तकनीक जहां एक व्यक्ति के लिए ठीक तरीके से काम करती है, तो दूसरे के लिए इसका इस्तेमाल जरूरी नहीं होता है। इलाज की सामान्य तकनीकों में सेवन किए जाने वाले पदार्थ का संतुष्टि स्तर जांचना, आंतरिक मामलों की जड़ तक पहुंचने के लिए चिकित्सक से होने वाली मुलाकात करना और मरीज को इस बात का अहसास दिलाने के लिए कि वह अकेला नहीं है, के लिए मददगार समूह के क्रियाक्लाप आयोजित करवाना शामिल होता है। आर्ट थैरेपी कार्यक्रम रिकवरी सेंटर में मरीजों की आंतरिक भावनाओं और चुनौतियों की पहचान करने में सहायता करते हैं। पुनर्वास केंद्रों में इलाजरत मरीजों को स्वास्थ्य लाभ के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय खोजने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्हें बातचीत करने, लिखने, विचार जाहिर करने, सांझा करने और अकेले में समय व्यतित करने को प्रेरित किया जाता है। आर्ट थैरेपी से व्यक्ति की भावनाओं और विचारो को व्यक्त करवाने में काफी सहायता मिलती है। ऐसा अन्य किसी तरीके से नहीं हो पता है।

आर्ट थैरेपी का इतिहास

आर्ट थैरेपी परंपरागत कला प्रथाओं और मनोचिकित्सा के सिद्धांतों का मिश्रण है। इसके मौजूदा इस्तेमाल के अलावा आर्ट थैरेपी सन 1900 के मध्य में यूरोप और अन्य अंग्रेजी बोलने वाले देशों के विश्वविद्यालयों व कालेजों में कला शिक्षा का भाग था। मार्डन आर्ट थैरिपी के उपयोग के लिए एड्रियन हिल नामक ब्रिटिश कलाकार का काफी योगदान माना जाता है। हिल को आर्ट थैरेपी के पहले ज्ञात इस्तेमाल के साथ जोड़ा जाता है। इसके अलावा पहली बार उन्होंने ही तनाव को समाप्त करने के लिए चित्रों के निर्माण के माध्यम से भावनाओं को उजागर करने का विचार प्रस्तुत किया था। हिल ने वर्ष 1945 में आर्ट वर्सेज इलनेस नामक पुस्तक का प्रकाशन किया था। इस किताब के जरिये पहली बार किसी ने चिकित्सीय इलाज के लिए कला का इस्तेमाल करने की सलाह दी थी।

आर्ट थैरेपी का प्रथम इस्तेमाल वर्ष 1946 में सरे में स्थित निदेर्न अस्पताल में एडवर्ड एडमसन ने किया था। हिल ने अपना एक आर्ट स्टूडियो भी खोला था जिसमें अस्पताल में दाखिल मरीजों को अपनी भावनाएं जाहिर करने के लिए आर्ट वर्क करने की खुली छूट दी जाती थी।

एडमसन का मानना था कि किसी व्यक्ति का इलाज उसके अपने विवेकानुसार आर्ट वर्क करवाकर अधिक प्रभावशाली तरीके से किया जा सकता था। विशेष तौर पर बीसवीं सदी के मध्य की स्वास्थ्य सेवाएं एक व्यक्ति की मनोस्थिति के लिए एक खालीपन पैदा करने वाली, निराशाजनक व प्राय: हानिकारक होती थीं।

यद्यपि प्रारंभिक तौर पर आर्ट थैरेपी का इस्तेमाल दिमागी बीमारी के इलाज के लिए किया जाता था, मगर पिछले कई दशकों से स्पष्ट हो चुका है कि इसका दूसरा इस्तेमाल पुनर्वास प्रक्रिया में किया जा रहा है। आज आर्ट थैरेपी का इस्तेमाल स्कूल, विश्वविद्यालयों, नशा निवारण केंद्रों और अत्याधिक बीमार लोगों की पीड़ा कम करने के लिए किया जा रहा है। आर्ट थैरेपी को प्रसन्नता को बढ़ाने और जीवन के हर कदम में अच्छा करने के लिए प्रभावी पाया गया है। इसका इस्तेमाल नशा मुक्ति की शुरुआत में या फिर नशा मुक्ति के इलाज के बाद भी किया जाता है।

आर्ट थैरेपी के उपयोग

दुनिया भर के पुनर्वास केंद्र नशे की लत के अलग-अलग रूपों के इलाज के लिए आर्ट थैरेपी का इस्तेमाल कर रहे हैं। हालांकि विभिन्न सुविधाएं अलग-अलग तरीकों से आर्ट थैरेपी का इस्तेमाल करती है, मगर इसकी उपस्थिति बहुत आम है।

समान्यता अधिकतर नशा निवारण केंद्र या तो आर्ट थैरेपी कक्षाओं का आयोजन करते हैं या फिर किसी एक दिन समय निर्धारित किया जाता है, या फिर वास्तविक आर्ट थैरेपी कक्षाओं का उपयोग किया जाता है। या फिर वे लोगों को छुट्टी के दिन आर्ट थैरेपी करवाने के लिए स्टूडियो खोलते हैं। जब भी लोग इस बात का एहसास करते हैं कि वे आर्ट के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त और जाहिर करने के लिए तैयार हैं, वे इसका इस्तेमाल करते हैं।

पेंटिंग थैरेपी

संभवत: आर्ट थैरेपी में सृजन का सबसे सामान्य रूप पेंटिंग है। एक सार्वभौमिक कला के तौर पर इसका इस्तेमाल विश्व भर में किया जा रहा है। व्यापक व गहरे रंगों के कारण आर्ट थैरेपी में अक्सर पेंटिंग का पक्ष लिया जाता है। इसके अनुसार कई प्रकार के रंग होते हैं, जिनको भावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला दिखाने के लिए रूपांतरित किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर आयल कलर को ले सकते हैं, जिनका इस्तेमाल भड़किले रंगों को दिखाने और कई विभिन्न भावनाओं व विचारों के लिए किया जाता है। जो छवियों व संदेशों की एक रंगावली प्रस्तुत करते हैं। वाटर कलर भी अक्सर नरम, निर्मल भावनाओं को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो मौन रंग व्यक्त करता है।

नकाशी चिकित्सा

मिट्टी और इससे नकाशी करने की प्रक्रिया भी एक बहुत आम तकनीक है। पेंटिंग का अंतिम उत्पाद अक्सर सूचक व उद्बोधक समझता जा सकता है। नकाशी की पूरी प्रक्रिया ही काफी संतोषजनक होती है।

अन्य उपचार

आरिगेमी पेपर फोल्ड कला विवरण पर ध्यान केंद्रीत करने और कुछ सुंदर व उत्कृष्ट बनाने में व्यक्तियों की मदद कर सकती है। कई लोग आयल पेस्टल, चारकोल, रंगीन पेंसिलें भी नशे की लत से रिकवरी के दौरान इस्तेमाल करने की अनुशंसा करते हैं।

अधिकतर आर्ट थैरेपी स्टूडियो, कक्षाएं व पुनर्वास सुविधाएं रिकवरी का उच्चतम स्तर पाने के लिए इलाजरत व्यक्ति को अपनी इच्छा अनुसार आर्ट थैरेपी का माध्यम चुनने के लिए प्रेरित करते हैं।

उजली किरण

भरे पूरे परिवार को मुसीबत में डाल गया एचआईवी वायरस

* शादी के 11 साल बाद अचानक पति की मौत ने खोला राज
* जांच हुई तो पता चला कि पारुल व उसके दोनों बच्चे भी हैं संक्रमित
* समाज ने मुंह फेरा मगर हिम्मत व मेहनत से बचाया परिवार

मेरा नाम पारुल (काल्पनिक नाम) है। मैं हमीरपुर की रहने वाली हूं। जिंदगी का कुछ पता नहीं होता कब क्या से क्या हो जाए। ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी घटित हुआ। मेरी जिंदगी में खुशियां आई तो जरुर थीं, लेकिन कब गम में बदल गईं इसका पता हीं नहीं चला। मेरी जिंदगी में दो मुसिबतें समंदर में उठने वाली ऊची लहरों की तरह इस कदर आई कि वे मेरे सुखी संसार को अपने साथ बहा कर ले गईं। हालत यह बन गई कि मेरे जीवन का कोई महत्व नहीं रह गया था।

पारुल अपनी जींदगी की कड़ी यादों को याद करते हुए बताती हैं कि वर्ष 1993 में उसकी शादी के साथ ही उसके नये जीवन की शुरुआत हुई। नया परिवार नये लोग सामने थे। हर एक लड़की का सपना होता है कि उसका पति स्वस्थ और दिखने में सुंदर हो। ठीक उसी प्रकार पारुल का के भी कुछ सपने थे। शादी के चार साल बाद उसके दो बच्चें हो चुके थे। बच्चों व भरे पूरे परिवार के साथ उसका जीवन खुशी खुशी चल रहा था।

कुछ दिनों बाद ना जाने उसके हंसते खेलते परिवार को किसकी नजर लग गई। पारुल के पति अचानक बिमार पड़ गए। काफी इलाज होने के बाद भी उनके स्वास्थय में कोई सुधार नहीं हो पा रहा था। हालत खराब होते देख उनको आईजेएमसी अस्पताल शिमला में भरती करवाया गया। वर्ष 2002 में तीन दिन अस्पताल में रहने के बाद आखिरकार उनकी मौत हो गई। पारुल के पति की मौत कोई सामान्य नहीं थी, उन्हें कुछ ऐसी बीमारी ने घेर लिया था, जो उनकी जान लेकर रही।

यह समय उसके लिये किसी बुरे सपने से कम नहीं था। उसकी सारी खुशियां पलभर में दुख में बदल गईं थीं। पारुल पूरी तरह से जिंदगी की जंग हार चुकी थी। लेकिन समय किसी के लिये नहीं रुकता। आगे पूरी जिंदगी और दो बच्चें की परवरिश की जिम्मेवारी थी। उसने अपने आप को संभाला। पति की मौत का कारण पता चला तो उसकी सांसें थम गईं। उसे एचआईवी संक्रमण था। ठीक समय पर बिमारी का पता ना चलने और इलाज ना होने के कारण उनकी मौत हुई थी। पारूल कहती हैं कि काश उनकी इस घातक बिमारी का समय पर पता चला होता तो उनके पति आज उनके साथ होते। इस बात से सबब लेते हुए उसने भी अपना एचआईवी टैस्ट करवाया। टैस्ट रिपोर्ट आई तो वह भी झकझोरने वाली थी, इसमें पारुल भी एचआईवी पॉजटीव पाई गईं। इतने पर भी उनके दुखों का अंत नहीं हुआ, बच्चों की जांच करवाई गई तो वे भी एचआईवी की चपेट में पाए गए। पति की मौत से टूट चुकी पारुल के लिए यह जानकारी किसी मौत से कम नहीं थी।

पारुल कहती हैं कि वह तो भगवान से यहीं दुआ करेंगी कि ऐसे दिन किसी को ना दिखाये। उनके बच्चों का हौसला भी गिर चुका था। इस बात की भनक लगते ही समाज ने भी उनसे किनारा कर लिया था। आसपास के लोगों ने उससे बात करना बंद कर दिया था। ऐसी परिस्थितियों के बीच कैसे ना कैसे उसे अपना व बच्चों के पेट के लिये काम-काज तो करना ही पड़ना था। पारुल को इस बात का भी दुख है कि लोग उसके बारे में उल्टी सीधी बाते भी बनाने लगे थे। इन सब बातों को झेलते हुए वह खेती बाड़ी करने लगी। लोग उसे देख कहने लगे कि अब ये परिवार ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह पाएगा। पारुल ने उनकी बातों को अनसुना करते हुए अपने काम में ध्यान दिया। वह मेहनत करती गई और हिम्मत नहीं हारी।

हालांकि पारुल बताती है कि यह समय उसके लिये किसी बुरे सपने से कम नहीं था। लेकिन अब उसका बुरा समय समाप्त हो गया है। सही परामर्श व इलाज के चलते अब उसका पूरा परिवार स्वस्थ है। पारुल बताती है कि वर्ष 2010 में वह गुंजन संस्था द्वारा चलाये जा रहे पीपीटीसीटी

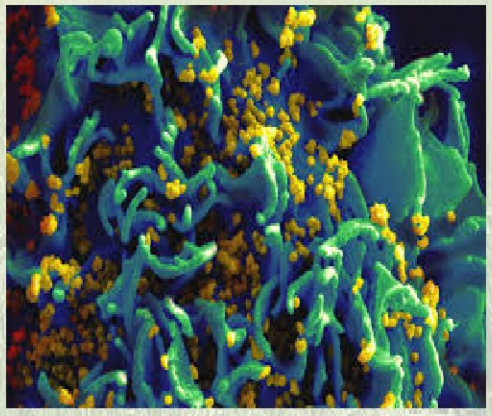

प्रोजेक्ट के साथ जुड़ीं। इसके बाद उसके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई। उसका बेटा जो अपाहिज है, दुकान चला रहा है। उसने अपनी बेटी की भी शादी कर दी है। आज वह अपने खुशहाल परिवार के साथ एचआईवी पीड़ित लोंगों को जीवन की नई राह दिखा रही है। उसने बताया कि आज समाज को कुछ एसे ही लोगों की जरुरत है जो दूसरों के लिये जीने की प्रेरण का स्त्रोत बनें। ऐसा ही बनना उसका ध्येय है।

खुशखबरी : 2030 तक खत्म हो सकता है एड्स

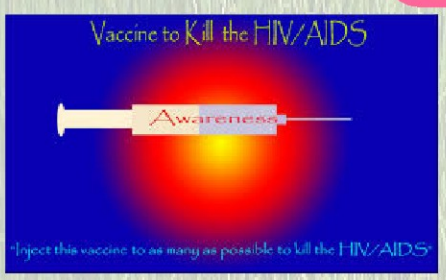

जिनेवा: संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि एड्स महामारी साल 2030 तक समाप्त हो सकती है। साथ ही यह भी कहा है कि वैश्विक प्रतिक्रिया के चलते भारत सहित दुनियाभर में तीन करोड़ एचआईवी के नए संक्रमणों को पिछले १५ सालों में टाल दिया गया है। भारत एचआईवी प्रभावित शीर्ष पांच देशों में शामिल है।

यूएनएड्स के रणनीतिक सूचना एवं मूल्यांकन के निदेशक पीटर घाइस ने कहा कि वर्ष 2015 तक डेढ़ करोड़ लोग जीवन रक्षक एचआईवी उपचार ले रहे हैं। साल 2011 में सदस्य राष्ट्रों ने डेढ़ करोड़ का जो महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया था उसे हासिल कर लिया गया है। इस उपलब्धि के साथ ही साल 2000 से एड्स संबंधित करीब 80 लाख मौतों को टाल दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्व ने 2000 से 2014 के बीच नए एचआईवी संक्रमणों में 35 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की है। 83 देशों में नए संक्रमणों को महत्वपूर्ण ढंग से कम कर दिया या उनमें बढ़ोतरी नहीं हुई।' पीटर ने कहा कि इसके अलावा जिन देशों में एचआईवी मामलों की संख्या सबसे अधिक है उन सभी ने अपने एचआईवी महामारी के रुख को पलट दिया है। इनमें दक्षिण अफ्रीका, भारत, मोजांबिक, नाइजीरिया एवं जिम्बाब्वे शामिल हैं।

भारत में साल 2014 में 785191 वयस्कों को एंटी रेट्रोवायरल उपचार मिल रहा था। इनमें 11724 गर्भवती महिलाएं शामिल हैं। इसके अलावा 14 साल की आयु वर्ग के 45546 बच्चों का भी इलाज चल रहा था।

पत्रकारिता में हैं रोजगार व शोहरत के अवसर

पत्रकारिता को आज के समय में लोकप्रिय व चुनौती भरे व्यवसाय के रुप में देखा जा रहा है। इस क्षेत्र में नाम के साथ साथ अच्छे पैकेज मिलने की काफी संभावनाएं हैं। युवा काफी तेजी से इस क्षेत्र की तरफ खीचे चले आ रहे हैं। प्रिंट मीडिया आज के समय में करियर के विकल्प के तौर पर अच्छा माध्यम है। न्यूज पेपर, मैगजीन के क्षेत्र में रोजगार के ढेरों अवसर मौजूद हैं।

यह क्षेत्र युवाओं को न्यूज रिपोर्टिंग, फोटोग्राफर, न्यूज पेपर ले आउट डिजाइनर, ग्राफिक्स डिजाइनर, कार्टूनिस्ट, जैसे क्षेत्रों जैसे क्षेत्रों में काम करने का अवसर प्रदान कर रहा है। युवा अपनी स्कील और इंटरस्ट के साथ किसी भी क्षेत्र को चुन सकते हैं। इस फील्ड में युवा पैसे के साथ साथ नाम भी कमा सकते हैं। यह क्षेत्र बाहर से जितना अच्छा लगता है, अंदर से उतना ही कठिन है। इस क्षेत्र में काफी धैर्य और अच्छी कम्युनिकेशन स्किल आपको एक अच्छा पत्रकार बना सकते हैं। युवा अपनी रुचि के अनुसार इन क्षेत्रों को चुन सकते हैं। आज हिंदी, अंग्रेजी भाषाओं में हजारों न्यूज पेपर प्रकाशित हो रहे हैं।

पत्रकारिता की डिग्री के अलावा भाषा के ज्ञान के अलावा सामान्य ज्ञान व वर्तमान परिपेक्ष्य का ज्ञान होना इस क्षेत्र के लिए जरूरी है। हमारे देश में हिंदी और अंग्रेजी के काफी समाचर पत्र प्रकाशित होते हैं। समाचर लेखन में रुचि रखने वाले युवा एक बेहतरीन करियर के तौर पर अपनी कबिलियत को आजमा सकते हैं। इसके अलावा आज न्यूज एजेंसियों में भी अवसर मौजूद रहते हैं। आज प्रत्येक क्षेत्र में मीडिया अहम हिस्सा बन चुका है। बड़ी-बड़ी कंपनियों में अलग से मीडिया विभाग कार्यरत हैं। इनमें भी भाग्य आजमाया जा सकता है। जर्नलिज्म आज के समय में एक चैलेंजेएबल प्रोफेशन के रुप में उभरा है। आज के समय में लगभग चार हजार से अधिक समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

इससे राष्ट्रीय समाचार पत्रों में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। इसके लिये आपके पास जर्नलिज्म की डिग्री के अलाव पत्रकारिता की बेसिक ट्रेनिंग होना जरूरी है। यह ट्रेनिंग आप किसी भी समाचार पत्र के कार्यालय से ले सकते हैं।

योग्यता

किसी भी मान्यता प्राप्त इंस्टीट्यूट या विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में स्नातक डीग्री होनी चाहिये। इसके अलावा कुछ संस्थान पत्रकारिता में शार्ट टर्म कोर्स भी करवाते हैं। कोर्स करने के बाद आप किसी भी न्यूज पेपर के साथ जुड़ कर अपने करियर की शुरुआत कर सकते हैं।

यहां कर सकते हैं कोर्स

इसके लिये आईआईएमसी (इंडियन इस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन) ,माखन लाल चतुर्वेदी युनिवर्सिटी, जामीया मीलिया इस्लामिया यूनिवर्सटी स्नातक, पोस्ट ग्रेजवेट और डिप्लोमा कोर्स चला रही हैं। इसके अलावा स्टेट यूनिवर्सिटी जैसे दिल्ली यूनिवर्सिटी, पंजाब यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सटी भी पत्रकारिता में स्नातक, स्नातकोत्र तथा पीएचडी प्रोग्राम चला रहे हैं। प्राइवेट इंस्टीट्यूट बाहरवी के बाद एक साल के बाद डिप्लोमा भी करवा रहे हैं। आजकल अधिकतर मीडिया चैनलों ने अपने इंस्टीट्यूट खोल दिये हैं, जहां पर स्टूडेंट्स को प्रैक्टीकल ट्रेनिंग दी जाती है।

अवसर

आज भारत में राष्ट्रीय हिंदी और अंग्रेजी समाचार पत्र निकलते हैं। इसके अलावा क्षेत्रीय भाषा में हजारों की संख्या में छोटे बड़े अखबार निकलते हैं। इसके अलावा न्यूज एंजेसी में रोजगार के काफी अवसर हैं। बस जरुरत है आप में योग्यता की। इस क्षेत्र में सराकारी नौकरी के भी काफी अवसर होते हैं।

कौशल

पत्रकारिता में सफलता प्राप्त करने के लिये युवाओं को करेंट अफेयर और रानीति के क्षेत्र की पूरी जानकारी होनी आवश्यक है। इसके अलावा आप में धैर्य और घंटो काम करने की क्षमता होनी चाहिए

शुरुआती वेतन

पत्रकारिता एक ऐसा करियर है जहां पैसे के साथ साथ नाम भी है। जैसा आपका काम होगा वैसा ही आपको पैसा मिलेगा। बड़े न्यूज पेपर में आप जैसे दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, शुरुआत में 15 से 20 हजार रुपये पा सकते हैं। इसके अलावा अग्रेजी न्यूज पेपर द इंडियन एक्सप्रेस, द हिंदू, द टाइम्स ऑफ इंडिया, जैसे नामी न्यूज पेपर में 20 से 30 हजार रुपये तक वेतन पा सकते हैं। प्रिंट मीडिया में वेज बोर्ड लागू होने के चलते यहां कार्यरत कर्मियों को केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित वेतनमान दिया जाता है।

प्रिंट विज्ञापन के क्षेत्र में अपार संभावनायें

प्रिंट विज्ञापन समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। आज के दौर में सभी न्यूज पेपर विज्ञापन के सहारे चलते है। इनकी आमदनी का सबसे बड़ा माध्यम विज्ञापन ही होते हैं। इस क्षेत्र में आप स्वतंत्र तौर पर काम कर सकते हैं। छोटी बड़ी कंपनियां को प्रचार प्रसार के लिये न्यूज पेपर में विज्ञापन का सहारा लेना पड़ता है। इसके अलावा सरकारी विभाग भी लगभग सभी छोटे बड़े समाचार पत्रों को विज्ञापन देते हैं। उसके लिये अच्छे और क्रियेटीव टीम की जरुरत होती है। कुछ बड़े समाचर पत्रों में विज्ञापन ऐजेंसी खोल ली हैं, जहां विज्ञापन के बनाने का काम होता है। इसके लिये कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। प्रिंट विज्ञापन को बनाने के लिये विज्ञापन लिखते समय आप को कम शब्दों में ज्यादा बात कहनी पड़ती है। इसके लिये आप को शब्दों के साथ खेलना आना चाहिये। आज के पास भाषा पर अच्छी पकड़ होनी चाहिये। न्यूज पेपर बड़ा हो या छोटा हो या बड़ा सभी को विज्ञापन बनाने वाली टीम की जरुरत होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र में रोजगार की संभावाये बढ़ जाती है। विज्ञापन के बिना किसी भी न्यूज पेपर का अगर आप क्रियेटीव आइडिया के साथ काम कर सकते हैं तो आप इस क्षेत्र में अच्छी सैलरी मिलने के अवसर बढ़ जाते हैं। इस क्षेत्र में थोड़ा अनुभव होने के बाद आप अपनी खुद की भी विज्ञापन कंपनी शुरु कर सकते हैं। इस क्षेत्र में आप विज्ञापन लेखन और विज्ञापन को डिजाइनिंग में करियर तलाश सकते हैं। इसके लिये आप को फोटोशॉप कोरल ड्रा, जैसे साफ्टवेयर पर काम करने का अनुभव होना चाहिये। इस क्षेत्र में सराकारी नौकरी के लिये भी अप्लाई कर सकते हैं। बहुत से सरकारी विभाग में विज्ञापन विभाग होता हैं। इस फील्ड में पैसे की कोई कमी नहीं है, आप जितनी रचनात्मकता के साथ काम करेंगे उतनी ही अच्चा पैसा मिलेगा।

बाल उमंग चढ़ रहा है सफलता की सीढ़ियां

धर्मशाला। जोनल अस्पताल धर्मशाला के चिल्ड्रन वार्ड में गुंजन संस्था के सहयोग से चलाया जा रहा बाल उमंग कार्यक्रम सफलता की सीढ़ियां चढ़ता जा रहा है। यह कार्यक्रम बच्चों को बीमारी व इलाज की पीड़ा से बाहर निकालने में मदद कर रहा है। जुलाई माह में इस कार्यक्रम के तहत अब तक 32 बच्चों को इलाज के दौरान मदद की गई। इसके तहत उन्हें खिलौने उपलब्ध करवाने के अलावा कहानियां सुनाई गईं और अन्य कई प्रकार की गतिविधियों से उनमें बीमारी का एहसास व दर्द कम किया गया और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ में मदद की गई।

संस्था के निदेशक संदीप परमार ने बताया कि संस्था की ओर से शुरू किए गए इस कार्यक्रम के अच्छे नतीजे सामने आने लगे हैं। उन्होंने बताया कि संस्था के काऊंसलर चिल्ड्रन वार्ड में उपलब्ध रहकर इलाजरत बच्चों को घर जैसा माहौल प्रदान करने में मदद करते हैं। उन्होंने एक बार फिर अपील की है कि इस कार्यक्रम की सफलता समाज की भागीदारी पर भी टिकी हुई है। इसके लिए लोगों के व्यक्तिगत व आर्थिक सहयोग की जरूरत रहती है। उन्होंने बताया कि जो व्यक्ति या संस्था यहां इलाजरत बच्चों की मदद करना चाहती है, वह संस्था की वेबसाइट डब्लूडब्ल्यूडब्ल्यू .गुंजनइंडिया.ओआरजी पर संपर्क कर सकता है। उन्होंने बताया कि अगर कोई चाहे तो वह बच्चों के पुराने खिलौने, कहानी की किताबें, जूजिकल इंस्ट्रूमेंट, ड्राइंग व अन्य प्रकार का बच्चों के मनोरंजन का सामान दान दे सकता है।

इसके अलावा नए वार्ड को भी बाल उमंग कार्यक्रम के तहत ढालने के लिए काफी चीजें बदलने की जरूरत होती है। जो व्यक्ति या संस्था इसमें आर्थिक मदद देना चाहता है, वह संस्था या अस्पताल के वार्ड नंबर 502 में कार्यरत बाल उमंग कार्यकर्ताओं से संपर्क कर सकता है।

उधर, बाल उंमग योजना के तहत इस माह लाभान्वित हुए बच्चों में अनुज कुमार, तेनजीन रेजसांग, रियांश, अर्व, मोहित, सक्षम, अंशुल, सिमरन, अर्शित, कनिष्का, मानवी, रुद्राक्ष शर्मा, साहिल, नकेश, अभिषेक, अंशिका, तनिष, दिव्यांश, महक, सागर, सहिजली, नक्श, अनिक, सूर्यांश, सुमित, लविश, अरनव व आरोही के नाम शामिल हैं।

आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

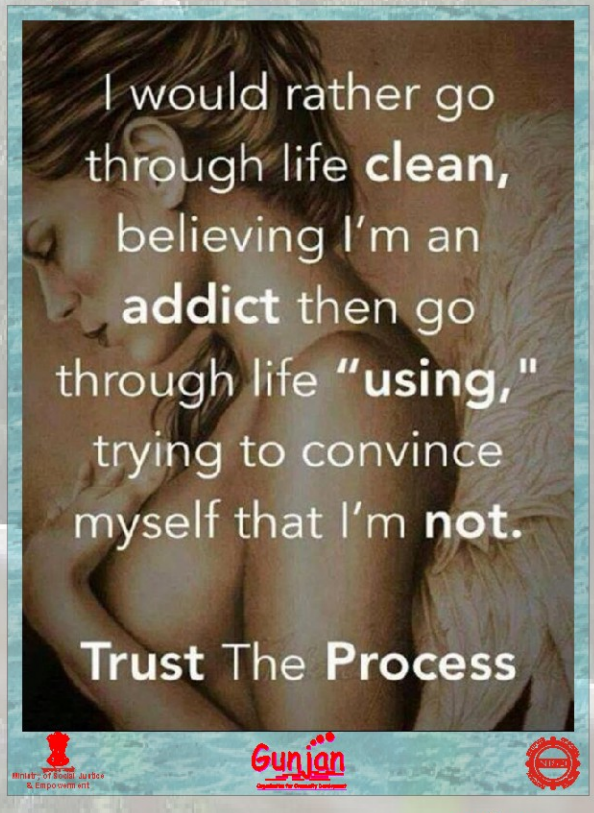

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice & Empowerment
Gunjan
Organisation for Community Development
NISD
Gunjan Organisation for Community Development° Regional Resource & Training Centre North - II, Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.) - 176057
Phone : 91-1892-235315, 208255, 9459082624, Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, Website: www.gunjanindia.org